International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(1): 92-93

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(1): 92-93
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-01-2019
Accepted: 14-02-2019

डॉ. अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग),
आर०सी०ए० गर्ल्स (पी0जी0)
कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग),
आर०सी०ए० गर्ल्स (पी0जी0)
कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

वेदों में अन्तर्निहित आधुनिक विज्ञान के तत्व

डॉ. अर्चना पाल

सारांश
भारतीय परम्परा में वेद को सदा से अपौरुषेय माना जाता रहा है एवं सभी ऋषि–मुनि, आचार्य एवं विचारक सदैव से ही वेद को ईश्वर की वाणी मानते आये हैं, उनके अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में मानव की उत्पत्ति होने पर उसके मार्गदर्शन तथा सर्वतोमुखी उन्नति कल्याण एव सुख–समृद्धि के लिये सर्वव्यापक एवं सर्वशाक्तिमान ईश्वर ने स्वंय वेदों का उपदेश दिया था तथा परमात्मा का ज्ञान होने के कारण परमात्मा की भांति ही वेद अनादि और नित्य हैं। मानव की भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति और अभ्युदय के लिये सभी प्रकार का आवश्यक ज्ञान–विज्ञान वेदों में निहित है।

कूटशब्दः ज्या, क्षिति, अश्व, मनोजवा, विमान

प्रस्तावना
आधुनिक विज्ञान के तत्व हमारे वेदों में विद्यमान हैं। आज हम जिन्हें अपने वर्तमान वैज्ञानिक युग का अविष्कार मानते हैं उनमें से बहुत से अविष्कार वैदिक काल की देन हैं। वेदों के द्वारा ही ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में मानव को वेदों का ज्ञान कराकर उसमें वर्णित ज्ञान–विज्ञान से मनुष्य का परिचय कराया है।
वस्तुतः वेद भौतिक और आध्यत्मिक ज्ञान–विज्ञान से परिपूर्ण वैज्ञानिक ग्रन्थ है। वेदों के माध्यम से जहाँ एक ओर आध्यात्म–विज्ञान का ज्ञान होता है, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक अथवा भौतिक–विज्ञान का ज्ञान हमें वेदों के द्वारा प्राप्त होता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारी पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है तथा सूर्य के आकर्षण से यह इधर–उधर नहीं हो सकती है और अपने मार्ग को छोडकर अणु–मात्र भी नहीं खिसक सकती है।
पृथ्वी के गौ, ज्या, क्षमा, क्षिति, अवीन, उर्वी मही, गो आदि इक्कीस नामों का प्रयोग वेदों में किया गया है और इनमें से एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो पृथ्वी के अचलत्व का सूचक हो, इससे यह स्पष्ट है कि पृथ्वी स्थिरा नहीं मानी जाती थी।

ऋग्वेद में पृथ्वी के भ्रमण–विज्ञान के विषय में कहा गया है कि–

> अहस्ता यदपदी वर्धत क्षा शचीभिर्वेद्यानाम् । शुष्णं परि प्रदक्षिणिद् विश्वायवे
> निशिश्नाथः (ऋ0 10.22.14)

अर्थात्

यह पृथिवी यद्यपि हस्तरहित और पैर से ही शून्य हैं तथापि बढ़ रही है अर्थात् हाथ पैर न होने पर भी यह चल रही है जानने योग्य जो परमाणु उनकी कियाओं से प्रेरित होकर चल रही है अथवा स्वपृष्ठस्थ विविध पर्वत आदि पदार्थो के साथ–साथ घूम रही है। सूर्य के चारों तरफ प्रदक्षिणा करती हुयी घूम रही है। हे परमात्मा हम मनुष्यों के विश्वास के लिये आपने ऐसा प्रबन्ध रचा है।
आज विज्ञान के द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि केवल पृथ्वी ही नहीं अपितु पृथ्वी जैसे सकल ग्रह, नक्षत्र आदि भी स्थिर नहीं है। वे सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते है। पृथ्वी के अपनी धुरी के चारों ओर घूमने पर दिन–रात होते हैं और सूर्य के चारों ओर घूमने पर एक वर्ष होता है। पृथ्वी पर जो भाग सूर्य के सामने पड़ जाता है वह भाग सूर्य की किरणें पड़ने से दिन कहलाता है तथा शेष भाग रात्रि। वेदों में इस तथ्य का रहस्योद्घटन किया जा चुका है कि पृथ्वी बहुत ही विस्तीर्ण है और अपनी धुरी पर घूमने के कारण ही आधे भाग में दिन रात रहता है तथा अन्य अर्ध भाग में रात्रि होती है।

भौतिक विज्ञान के अनुसार पृथ्वी सहित सभी ग्रह नक्षत्रों के पास अपना कोई प्रकाश नही होता है, अपितु ये सभी सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है कि –

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरवीच्यम्। इत्था चन्द्रसो गृहे।
(ऋ0 1.84.15)

अर्थात्

''गमनशील चन्द्रमा के इसी ग्रह में सूर्य का सुप्रसिद्ध ज्योति इस प्रकार छिपा हुआ रहता है।

इस के अनुसार चन्द्रमा के ग्रह में सूर्य का प्रकाश हुआ है और सूर्य के प्रकाश से ही चन्द्रमा प्रकाशित होता है इससे यह स्पष्ट है कि चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य से है। पृथ्वी के समान ही चन्द्रमा भी निस्तेज और अन्धकारमय है।
इसी प्रकार से आज हम विमानों को आधुनिक विज्ञान की देन मानते है, परन्तु वस्तुतः यह विज्ञान वैदिक काल में भी प्रचलित था। ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में विमान का वर्णन अश्व नाम से किया गया है। अश्व शब्द का अर्थ है शीघ्र गति से मार्ग तय करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाने वाला। विमानों में भी यह गुण पाया जाता है इसलिये इन मन्त्रों में विमान को अश्व कहा गया है–

''आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयनतं पतङ्गम।
शिरो अपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि।।''
(ऋ0 1.163.6)

अर्थात्

''हे अश्व! मैं इस पृथिवी से उठकर दूर आकाश मार्ग से उडते हुये तुम्हारे पक्षी रूप शरीर को मन से जानता हूँ, बिना किसी बाधा के सुखपूर्वक संचार के योग्य, धूल से रहित मार्गों से उड़ते हुये तुम्हारे पक्षी के सिर को मैंने देखा।''
इसी प्रकार से ऋग्वेद में कहा गया है कि –

''हिरण्यशृड़नेडयो अस्य पादा मनोजवा।''
(ऋ0 1.163.9)

अर्थात्

''इसके शृंग सुवर्ण के अथवा सुवर्ण की भांति चमकने वाले हैं, इसके पैर लोहे के हैं और इसका वेग मन की भांति तीव्र है।''

ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः सं शूरणासो दिव्यासो अत्याः।
हंसा इव श्रेणिसोथतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वा।
(ऋ0 1.163.10)

''जब ये अश्व बहुसंख्या में आकाश–मार्ग से उड़ते हैं तो ये पार्शव की ओर फैले हुये, बीच भाग में संकुचित, तीव्रगति से चलने वाले और निरन्तर देर तक चलने वाले हंसों जैसे पंक्ति बाँधकर चलते हैं।''
उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि यह अश्व और कुछ नहीं विमान है। विमान ही आकाश में उड़ सकता है, उसकी ही आकृति पक्षी जैसी होती है और उसी का शरीर लोहे आदि धातुओं से बना होता है। वेदों में अनेक स्थलों पर अश्व–पशु के अर्थ में प्रयुक्त न होकर यन्त्र–कला से संचालित होने वाले विमान, रथ आदि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'अश्व' शब्द अपनी व्युत्पत्ति के अनुसार शीघ्र मार्ग को तय कर लेने के कारण अश्व कहलाता है और यन्त्र संचालित विमान आदि भी अश्व हैं, क्योंकि वे भी मार्ग को शीघ्र पूरा कर लेते है।

विमानों से सम्बन्धित वर्णन यजुर्वेद में भी दृष्टिगोचर होते हैं–

विमान एव्रं दिवों मध्य आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम्। स विश्वाची रभिचष्टे घृताची रन्तरो पूर्वमपरंच केतुम् ।
(यजु0 17.59)

अर्थात्

''आकाश के मध्य में यह विमान के समान विद्यमान हैं द्युलोक, पृथिवी तथा अन्तरिक्ष मानों तीनों लोकों में अच्छी प्रकार परिपूर्ण होता है अर्थात् तीनों लोको में इसकी आहत गति है, सम्पूर्ण विश्व में गमन करने वाला, मेघ के ऊपर भी चलने वाला, वह विमान पर अधिष्ठित पुरूष इस लोक और उस परलोक इन दोनों के मध्य में विद्यमान प्रकाश सब तरह से देखता है।''
यहाँ स्पष्ट रूप से इसकी गति एवं इसमें चढने का उल्लेख किया गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी जब विमान का अन्वेषण किया गया तो पहले पशु–पक्षियों के आकाश में उडने एवं उनके पंखों की बनावट का अध्ययन किया गया था।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक विज्ञान के तत्व हमारे वेदों में विद्यमान थे तथा वेद भांति–भांति के विद्या–विज्ञान से परिपूर्ण ग्रन्थ हैं। निःसन्देह वैदिक वाङग्मयमें वर्णित तत्वों का अनुशीलन करने पर तथा वेदों में उपलब्ध विज्ञान का अन्वेषण कर आधुनिक विज्ञान को एक नवीन दिशा प्राप्त हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

1. ऋग्वेद – सायण भाष्य सहित वैदिक संशोधन मण्डल, पुना।
2. ऋग्वेद भाष्य भूमिका – ऋषि दयानन्द
3. यजुर्वेद संस्कारभाष्य – स्वामी भगवदाचार्य